HISTORY, B.A. HONS. Part II – Paper II

Intellectual Causes of the French Revolution (फ्रांसीसी क्रांति के लिए बौद्धिक कारण)

अठारहवीं शताब्दी की एक प्रमुख विशेषता यूरोप में बौद्धिक क्रांति का होना था। इस युग में फ्रांस में भी अनेक ऐसे विद्वानों का आविर्भाव हुआ, जिन्होंने अपनी लेखनी का प्रयोग करके तृतीय वर्ग की सोयी हुई आत्मा को जागृत किया तथा उन्हें अपने अधिकारों को प्राप्त करने के लिए प्रेरित किया। इन लेखकों ने फ्रांस में व्याप्त बुराइयों की कटु आलोचना की तथा अपनी कटु शैली और आलोचना के द्वारा समाज में व्याप्त असंतोष की कुशल अभिव्यक्ति की।

अठारहवीं शताब्दी के इन विद्वानों में प्रमुख मॉण्टेस्क्यू, वाल्तेयर, रूसो, दिदरो, केने थे। इसके अतिरिक्त अनेक लेखकों ने अपनी रचनाओं में आर्थिक दोषों को दूर करने के लिए सरकार से अपील की।

इस प्रकार अठारहवीं शताब्दी के फ्रांस के लेखकों ने राजनीतिक सिद्धांतों का प्रतिपादन कर फ्रांस की क्रांति को जन्म देने वाले कुछ प्रमुख साहित्यकारों का वर्णन निम्नलिखित किया है:-

(1) मांतेस्क्यू (Montesquieu):- मान्तेस्क्यू कुलीन परिवार में जन्मा था और इंग्लैण्ड में उसने कुछ दिन बिताए थे, जिसके कारण वह वहाँ की शासन पद्धति से काफी प्रभावित था। उसने अपनी पुस्तक "The Spirit of Law" में राजा के दैवी अधिकारों के सिद्धांत का कड़े और से खण्डन किया है और फ्रांसीसी राजनैतिक संस्थाओं की कड़ी आलोचना की है। वह वैधानिक शासन तथा व्यक्तिगत स्वतंत्रता का प्रबल समर्थक था। उसका विश्वास था कि जब तक शासन के क्षेत्र में शक्तियों का पृथक्कीकरण नहीं हो जाता, तब तक निरंकुश शासन का अन्त नहीं होगा। इसी संदर्भ में उसने शक्ति पृथक्करण के सिद्धांत का प्रतिपादन किया, जिसके अनुसार शासन के तीन प्रमुख अंग कार्यपालिका, व्यवस्थापिका और न्यायपालिका को अलग-अलग हाथों में रहने की उसने सलाह दी। उसका विचार था कि फ्रांस में ये तीनों शक्तियाँ एक ही व्यक्ति, अर्थात् राजा के हाथों में केन्द्रित हैं, इसलिए फ्रांस की जनता को स्वतंत्रता नहीं है।

(2) वाल्तेयर (Voltaire):- वाल्तेयर एक दक्ष पत्रकार तथा व्यंग्यकार था। वह जनतंत्र में विश्वास नहीं करता था और चर्च से काफी चिढ़ा हुआ था। राजनीति के क्षेत्र में वाल्तेयर के विचारों को उदार या प्रजातांत्रिक नहीं माना जा सकता क्योंकि उसे प्रजा के सुधार की शक्ति में कतई विश्वास नहीं था। आवश्यक सुधार के लिए वह राजा को ही उपयुक्त मानता था। फिर भी उसने तत्कालीन अव्यवस्था के विरुद्ध रचनाएँ कीं।

(3) रूसो (Rousseau):- रूसो का जन्म एक साधारण परिवार में हुआ था। उसकी शिक्षा-दीक्षा भी बहुत साधारण थी।

Lovely

वह लापरवाह और घुमक्कड़ किस्म का व्यक्ति था। उसने तर्क के आधार पर पुरातन व्यवस्था की धज्जियाँ उड़ा दी और सर्वसाधारण के मन में क्रांति की भावना भर दी। इसीलिए रूसो को क्रांति का अग्रदूत कहा जाता है। उसने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक सामाजिक समझौता (Social Contract) में बताया कि मनुष्य प्राकृतिक अवस्था में अच्छा होता है और बाद में सभ्यता एवं संस्थाएँ उसे दूषित करती है। उसने बताया की जनता ही सर्वोपरि है और सार्वभौम सत्ता जनता में ही निहीत है, जिसे "सामान्य इच्छा" (General will) कहा जाता है। उसका कहना था कि राज्य के कानून को इसी सामान्य इच्छा (General will) की अभिव्यक्ति होनी चाहिये। लेकिन कानून का स्वरूप ऐसा नहीं रह गया है, बल्कि यह शासक की इच्छा पर रहने लगा है।

4. <u>अन्य दार्शनिक</u> :- इसके अलावा भी कुछ लेखक थे, जिन्होंने फ्रांस की कुरीति की तरफ लोगों का ध्यान आकृष्ट कराया। दिदरो ने "ज्ञान कोष" का संपादन किया जिसमें अपने समय की योग्यतम व्यक्तियों की रचनाएँ संकलित थी। इस पुस्तक में लोगों के समस्त ज्ञान के विभिन्न पहलुओं को तर्क के आधार पर रखने की कोशिश की गई थी। इसमें धर्म और राजनीति से संबद्ध बड़े ही आलोचनात्मक लेख छपे थे। इसके अलावा राजतंत्र की निरंकुशता और स्वेच्छाचारिता, चर्च की भ्रष्टता, सामंत पद्धति तथा सामाजिक असमानता, शासन में व्याप्त भ्रष्टाचार तथा कानून इत्यादि पर कई लेख लिखे गये थे। इन लेखों ने जनता को नए दृष्टिकोण से सोचने को मजबूर किया, जिससे फ्रांसीसी सरकार घबड़ा गई और दिदरो को परेशान करने लगी।

5. <u>अर्थशास्त्री</u> :- इसके अलावा कुछ अर्थशास्त्रियों ने भी जनता को सजग किया। क्वेसने मुक्त व्यापार का घोर समर्थक था। उसका विश्वास था कि आर्थिक क्रियाकलाप में जब तक सरकारी हस्तक्षेप रहेगा तब तक देश का आर्थिक विकास असम्भव है। वह व्यापारियों पर चुंगी लगाने का विरोधी था और यह ज्ञातव्य है कि तत्कालीन फ्रांस में व्यापार पर अत्यधिक चुंगी लगायी जाती थी। फ्रांसीसी व्यापारियों ने क्वेसने के विचारों का काफी स्वागत किया। तुर्गो मध्यमवर्ग द्वारा आर्थिक क्षेत्र में राजकीय नियंत्रण के अभाववाले इस सिद्धांत का समर्थक था। इसके अलावा भी अनेक लेखक और पत्रकार थे, जिन्होंने अपने लेखों द्वारा फ्रांस की कुरीतियों की ओर लोगों का ध्यान आकृष्ट कराया।

इस प्रकार 18वीं शताब्दी के फ्रांस के लेखकों ने राजनीतिक सिद्धांतों का प्रतिपादन कर फ्रांस को राजनीतिक एवं सामाजिक क्रांति के कगार पर ला खड़ा किया। इन लेखकों ने क्रांति के नेताओं में निश्चयात्मक सिद्धांत भर दिये तथा उन्हें कुछ सैद्धांतिक वाक्यों तथा तर्कों से सुसज्जित कर दिया। इन लेखकों ने फ्रांस के →

तृतीय वर्ग के समक्ष शक्तिशाली स्वप्न प्रस्तुत किये और उन्हें आशावादी बनाया। हेजन ने लिखा है कि इन लेखकों ने क्रांति के कारण को अत्यंत चतुरता से जनता के समक्ष स्पष्ट किया तथा उनकी ओर लोगों का ध्यान आकृष्ट किया। लोगों को वाद-विवाद के लिए बाध्य किया तथा पुरातन व्यवस्था के विरुद्ध क्रोध एवं घृणा को प्रज्वलित किया। इन्हीं लेखकों ने फ्रांसीसी जनता को स्वतंत्रता, भ्रातृत्व एवं समानता (Liberty, Fraternity and equality) का पाठ पढ़ाया।

वास्तव में तत्कालिन फ्रांस की परिस्थिति ऐसी बन चुकी थी कि क्रांति का होना तो सुनिश्चित था, किन्तु इन लेखकों की लेखनी ने क्रांति का मार्ग प्रशस्त किया।

S.W. [signature]
16.7.2020